पद्य परिमल

सम्पादक

प्रो. बळीराम धापसे

सह-सम्पादक

डॉ. शेखर घुंगरवार | डॉ. भगवान गव्हाड़े | डॉ. विनोद कुमार वायचळ

सम्पादन मंडल

प्रोफेसर शिवाजी सांगोळे
प्रोफेसर भारती गोरे
प्रोफेसर बळीराम धापसे
प्रोफेसर प्रमोद पाटील
डॉ. भगवान गव्हाड़े
प्रोफेसर आबासाहेब राठोड़
डॉ. सुरेश मुंढे
प्रोफेसर विजय कुमार वैराटे
प्रोफेसर ललिता राठोड़
प्रोफेसर सुनील कुलकर्णी
डॉ. विनोद कुमार वायचळ
डॉ. शेखर घुंगरवार
प्रोफेसर सय्यद शौकत अली

पद्य परिमल

सम्पादक

प्रो. बळीराम धापसे

सह-सम्पादक

डॉ. शेखर घुंगरवार

डॉ. भगवान गव्हाड़े

डॉ. विनोद कुमार वायचळ

लोकभारती प्रकाशन

लोकभारती प्रकाशन
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग
प्रयागराज-211 001
वेबसाइट : www.lokbhartiprakashan.com
ईमेल : info@lokbhartiprakashan.com
शाखाएँ : 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने
पटना-800 006
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

पहला संस्करण : 2022 | **मूल्य :** ₹95

बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
द्वारा मुद्रित

PADYA PARIMAL
Edited by Prof. Baliram Dhapase

ISBN : 978-93-93603-51-7

क्रम

भूमिका 9

संत नामदेव **15**

संत नामदेव के पद 17

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै 17

ऐसो राम राइ अन्तरजामी 17

संत कबीर **18**

संत कबीर के पद 20

दुलहनी गावहू मंगलाचार 20

काहे रे नलिनी तू कुम्हिलानी 20

मोकों कहाँ ढूंढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में 20

संत रैदास **21**

संत रैदास के पद 23

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी 23

संत ची संगति संत कथा रसु 23

ऐसी भगति न होइ रे भाई 23

मलिक मुहम्मद जायसी **25**

पद्मावत 27

मैं एहि अरथ पंडितन्ह बूझा 27

मुहमद कबि यह जोरि सुनावा 27

मुहमद बिरिध बएस अब भई 27

संत सूरदास **29**

संत सूरदास के पद 31

मैया! मैं नहिं माखन खायो 31

जसोदा हरि पालनैं झुलावै 31

ऊधौ मन न भये दस बीस 31

संत मीराँबाई 32
संत मीराँबाई के पद 34
पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे 34
माई री म्हा लियाँ गोविन्दो मोल 34
मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई 34
रहीम 35
रहीम के दोहे 38
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय 38
रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून 38
जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय 38
एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय 38
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय 38
संत तुकाराम 39
संत तुकाराम के पद 41
आपे तरे त्याकी कोण बराई 41
जग चले उस घाट कौन जाय 41
बार-बार काहे मरत अभागी 41
बिहारी 42
बिहारी के दोहे 44
नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल 44
कनक कनक ते सौगुना मादकता अधिकाय 44
संगति सुमति न पावहिं परे कुमति कैं धंध 44
कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात 44
मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ 44
भूषण 45
भूषण के पद 47
साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि, 47
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहन वारी, 47
सबन के ऊपर ठाढ़ो रहिबे को जोग, 47
नृपशम्भू 48
नृपशम्भू के पद 50
सासु कह्यौ दधि बेंचन कोसु 50
रूप को कूप बखानत है कवि। 50
छत्र, गज, चामर, तुरंग अगनित संग। 50

घनानन्द **51**
घनानन्द के छन्द 53
अति सूधो सनेह को मारग है 53
झलकै अति सुन्दर आनन गौर 53

व्याख्या भाग *54*

गोस्वामी तुलसीदास **73**
महाकाव्यांश : रामचरितमानस
अयोध्या काण्ड (चौपाई-दोहा क्रम 251-300) 74

आवरण परिकल्पना : राजकमल स्टूडियो

लोकभारती प्रकाशन